भारत का अमृत महोत्सव
भारतीय वन के पौष्टिक महत्व के कवक
(Fungi of Neutraceutical Importance from Indian Forests)
दिनांक : 07.06.2021

प्रधानमंत्री द्वारा आहूत तथा भारत सरकार एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के निर्देशानुसार वन उत्पादकता संस्थान रांची द्वारा संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी की तत्परतायुक्त निर्देशन एवं समूह समन्वयक अनुसंधान डा. योगेश्वर मिश्रा के सफल मार्गदर्शन में दिनांक 07.06.2021 को आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत "भारतीय वन" विषय पर क्रमिक साप्ताहिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमे संस्थान के अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थीयों के अलावा अन्य संस्थान के शिक्षार्थी एवं शिक्षाविदों सहित लग्भग 80 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। आज के कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के अवकास प्राप्त वैज्ञानिक-जी सह समूह समन्वयक अनुसंधान डा. एन.एस.के.हर्ष द्वारा "भारतीय वन के पौष्टिक महत्व के कवक **(Fungi of Neutraceutical Importance from Indian Forests)"** प्रस्तुती रही।

श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर के द्वारा कार्यक्रम की संक्षिप्त रुपरेखा प्रस्तुत की गई एवं कार्यक्रम की अवधारना एवं महत्व को रेखांकित किया गया। प्राकृतिक संसाधनों में से एक 'कवक' के संरक्षण एवं इसकी पौष्टिकता पर शोध की आवश्यकता को कार्यक्रम में विस्तार देने के लिए संस्थान के निदेशक महोदय से आग्रह किया।

संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने प्रतिभागियों एवं मुख्य आमंत्रित अतिथि डा. हर्ष का स्वागत करते हुए उनके साथ काम करने का अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि पौष्टिकता से भरपूर वनों से प्राप्त कवक के विषय में डा. हर्ष को महारथ हासिल है। प्रधानमंत्री के इस कार्यक्रम के उदेश्यों पर प्रकाश डालते हुए डा. कुलकर्णी ने बताया कि वानिकी के संसाधनों में से एक मशरुम सिर्फ पौष्टिकता के लिए ही नहीं अपितु औषधीय उपयोग एवं जिविकोपार्जन के लिए भी अपना अलग महत्व रखता है। झारखंड के रुगड़ा, खाद्ध और अखाद्ध मशरुम, विषाक्त मशरुम की चर्चा करते हुए संस्थान में एक रोगी विज्ञानी की आवश्यकता बताया जिससे इन संसाधनों की पहचान एवं शोध को बल मिल सके। शोधकर्मियों से इस विषय पर कार्य करने का आग्रह भी किया। उन्होने कवक को पारिस्थितिकी संतुलन का एक प्रमुख अवयव बताते हुए संग्रहित कवक को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून भेजकर शोध साझा करने पर बल दिया। डा. हर्ष के विशाल अनुभव को अंकित कर सुचीबद्ध करने का आग्रह करते करते हुए इसपर कार्य करने की सलाह दी। लाक-डाउन की वजह से आभासीय मंच द्वारा आयोजित कार्यक्रम को एक अवसर बताया।

आमंत्रित मुख्य वक्ता ने रुगड़ा, मशरुम आदि के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इस क्षेत्र में अपने कार्य के अनुभव को प्रस्तुत किया। कवक को पारिस्थितिकी महत्व की चीज बताते हुए इसकी स्वीकार्यता को विस्तार से रखा। हर्बल जड़ी-बुटी के अलावा इसे खाद्ध पदार्थों का पूरक बताया एवं इसके उपयोगों को विस्तार से बताते हुए विभिन्न प्रकार के

मशरुमों को अलग-अलग चित्र दिखाते हुए उसकी पहचान को मंच पर रखा। कुल 225 टन उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी 65 टन बताते हुए इसके विशाल बाज़ार की भी चर्चा की। संग्रहण में महिला, पुरुष एवं बच्चों की सहभागिता, बालू मशरुम, टेनकस, बटन, हिमालयी मशरुम, शाल क्षेत्र के मशरुम, बड़े गेस्ट मशरुम, Puff Ball, Chicken of Wood, Beaf stick, Turkey Tell, Golden Jelly, Pink Parasoles, Florolibera, Anamita Muskaria, Fly Agaria, opheocordyceps, Ganoderma आदि अनेकों मशरुम का फोटो दिखाते हुए उनके उपयोग, खाध स्वीकार्यता, नशीला, जहरीला, औषधीय आदि गुणों की विवेचना की। उन्होने बताया कि जहरीला मशरुम में औषधीय गुण अधिक होते है। उग्र श्रेणी में नहीं आने के कारण वैसे मशरुम का उपयोग खिलाड़ी प्राय: किया करते है। इसके कैसर रोधी, रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक आदि की भी चर्चा की। अंत में इसके विकास एवं शोध के लिये निदेशक के आग्रह को स्वीकार करते हुए वन उत्पादकता संस्थान के साथ कार्य में सहयोग का आश्वासन भी दिया।

डा. योगेश्वर मिश्रा, श्री रवि शंकर प्रसाद, डा. बली सिंह, मुनमुन मित्रा आदि के द्वारा पूछी गई शंकाओं का समुचित समाधान प्रस्तुतकर्ता द्वारा किया गया।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डा. योगेश्वर मिश्रा ने संस्थान में इस क्षेत्र में कार्य करने के लिये सहयोग के लिये डा. हर्ष को उपयुक्त बताते हुए बांस प्रवर्धन के साथ इसकी खेती के लिये उनसे सहयोग की आवश्यकता दर्शाइ व इस हेतु आग्रह किया। डा. मिश्रा ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में संलग्न सभी प्रभागों विशेषतय: विस्तार प्रभाग का धन्यवाद करते हुए प्रतिभागियोंको धन्यवाद दिया एवं कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

कार्यक्रम को सफल बनाने में विस्तार प्रभाग के एस.एन.वैध, बी.डी.पंडित, सूरज कुमार एवं सेवा एवं सुविधा प्रभाग के डा. एस.एन.मिश्रा, निसार आलम, बसंत कुमार आदि की सराहनीय भूमिका रही।

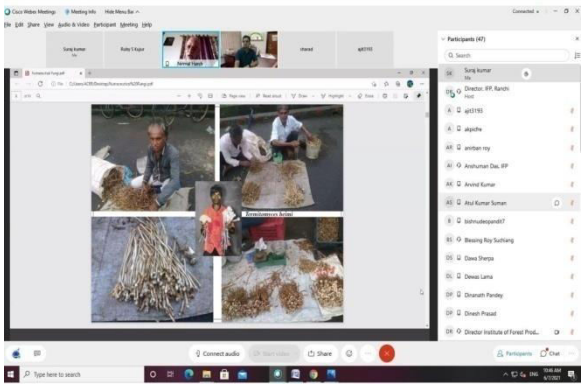

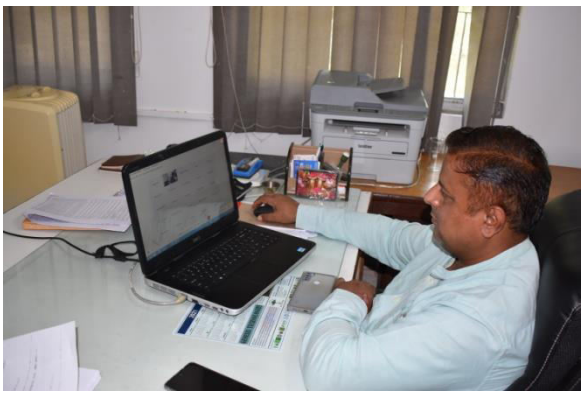

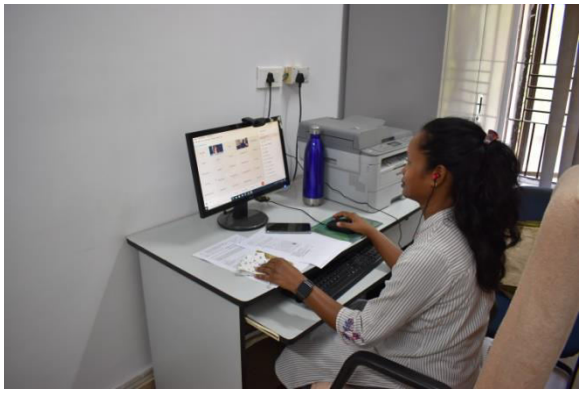

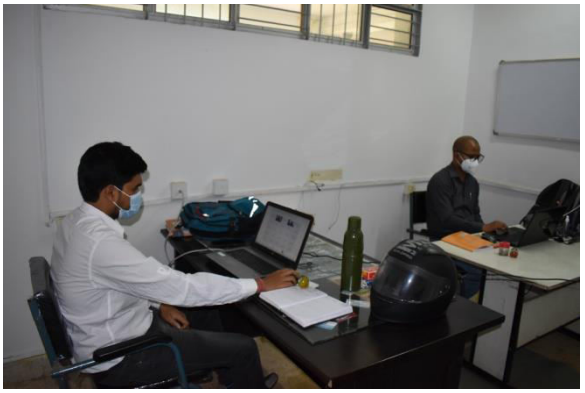

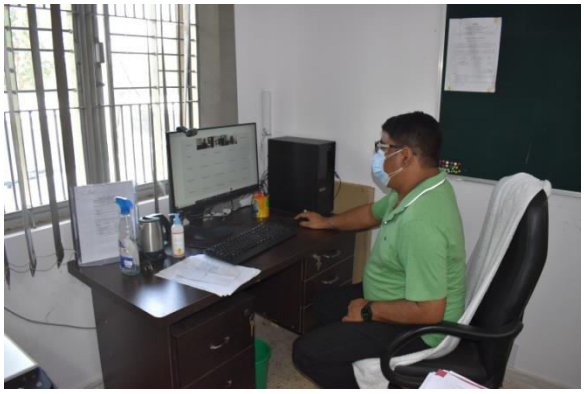

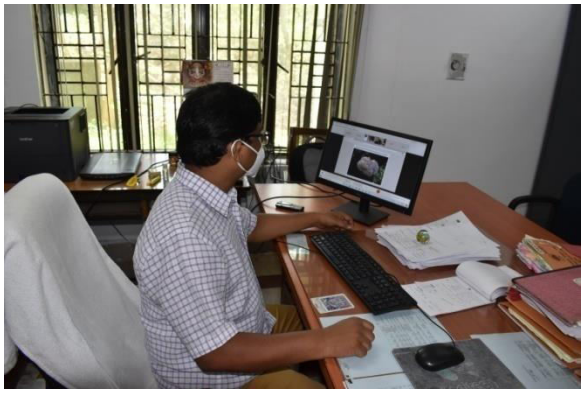

कार्यक्रम की झलकियाँ

कार्यक्रम की झलकियाँ

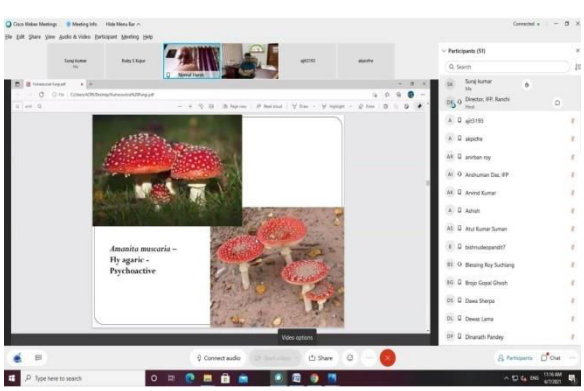

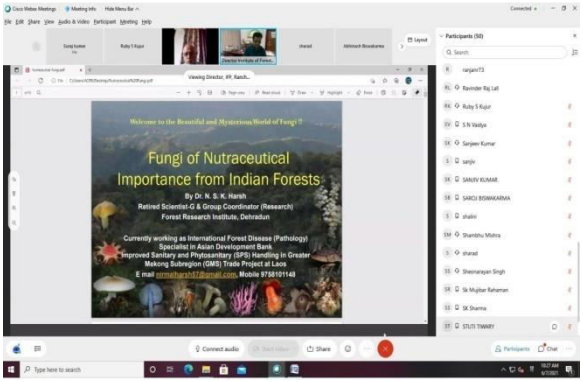

भारतीय वन विषय पर कार्यक्रम, निदेशक ने कहा-

वनों से गरीबों को मिलते हैं पौष्टिक आहार

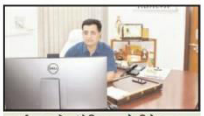

कार्यक्रम को संबोधित करते निदेशक।

देशप्राण संवाददाता

पिस्का नगड़ी, 7 जून : आजाद भारत की द्रुतगतीय प्रगति को स्मरण तथा जागरुकता के उदेश्य से प्रधानमंत्री के आह्वान एवं भारत सरकार तथा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् देहरादून के निर्देश पर वन उत्पादकता संस्थान, लालगुटवा रांची में निर्देशक डा. नितिन कुलकर्णी के नेतृत्व में भारतीय वन विषय पर एक कार्यक्रम आभासीय मंच के माध्यम से आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रांतो तथा संस्थान के शिक्षार्थी एवं शिक्षाविदों ने हिस्सा लिया। डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा पराधीन भारतीय वन एवं आजाद भारत का वन समृद्ध था लेकिन विदेशियों की सुविधा का साधन आजाद भारत का वन गरीबों के पेट भरने तथा आर्थिक विकास को गति देने में थोड़ी कम जरुर हुई है, लेकिन भारत को विश्व स्पर्धा बनाने में बड़ी भूमिका निभायी है। कार्यक्रम का मुख्य व्याख्याता वन अनुसंधान संस्थान के सेवानिवृत्त वैज्ञानिक-जी समूह समन्वयक अनुसंधान डा. एनएसके हर्ष रहें, जिन्होंने भारतीय वन के पौष्टिक महत्व के विषय में विस्तार से बताया और आर्थिक विकास, गरीबों का पौष्टिक आहार वनीय कवक के संरक्षण के विभिन्न पहलुओं को उद्धरित किया।

देशप्राण

भारतीय वन आजाद भारत का समृद्ध वन था : कुलकर्णी

पिस्का नगड़ी : आजाद भारत की द्रुत गतीय प्रगति को स्मरण तथा जागरुकता के उदेश्य से प्रधानमंत्री के आहवाहन एवं भारत सरकार तथा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के निर्देश पर वन उत्पादकता संस्थान, लालगुटवा रांची में निर्देशक डा. नितिन कुलकर्णी के नेतृत्व में भारतीय वन विषय पर एक कार्यक्रम आभासीय मंच के माध्यम से आयोजन किया गया जिसमे विभिन्न प्रांतो तथा संस्थान के शिक्षार्थी एवं शिक्षाविदों ने हिस्सा लिया। डा. नितिन कुलकर्णी ने कहा पराधीन भारतीय वन एवं आजाद भारत का वन समृद्ध था लेकिन विदेशीयों के सुविधा का साधन आजाद भारत का वन गरिबों के पेट भरने तथा आर्थिक विकास को गति देने में थोड़ी कम जरुर हुई है, लेकिन भारत को विश्व स्पर्धा बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है।

रांची एक्सप्रेस

भारतीय वन विषय पर कार्यक्रम आयोजित

पिस्का नगड़ी : आजाद भारत की द्रुत गतीय प्रगति को स्मरण तथा जागरुकता के उदेश्य से प्रधानमंत्री के आह्वान एवं भारत सरकार तथा भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के निर्देश पर वन उत्पादकता संस्थान, लालगुटवा रांची में निर्देशक डा. नितिन कुलकर्णी के नेतृत्व में भारतीय वन विषय पर एक कार्यक्रम आभासीय मंच के माध्यम से आयोजित किया गया जिसमे विभिन्न प्रांतों तथा संस्थान के शिक्षार्थी एवं शिक्षाविदों ने हिस्सा लिया। डा. नितिन कुलकर्णी ने कहा पराधीन भारतीय वन एवं आजाद भारत का वन समृद्ध था लेकिन विदेशियों के सुविधा का साधन आजाद भारत का वन गरिबों के पेट भरने तथा आर्थिक विकास को गति देने में थोड़ी कम जरुर हुई है, लेकिन भारत को विश्व स्पर्धा बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है। कार्यक्रम का मुख्य व्याख्याता वन अनुसंधान संस्थान के सेवानिवृत वैज्ञानिक-जी समूह समन्वयक अनुसंधान डा. एन.एस.के. हर्ष रहे जिन्होंने भारतीय वन के पौष्टिक महत्व के विषय में विस्तार से बताया और आर्थिक विकास, गरीबों का पौष्टिक आहार वनीय कवक के संरक्षण के विभिन्न पहलुवों को उद्धरित किया।

राष्ट्रीय सागर

कार्यक्रम की झलकियाँ